

झारखण्ड – एक नज़र में परिचय

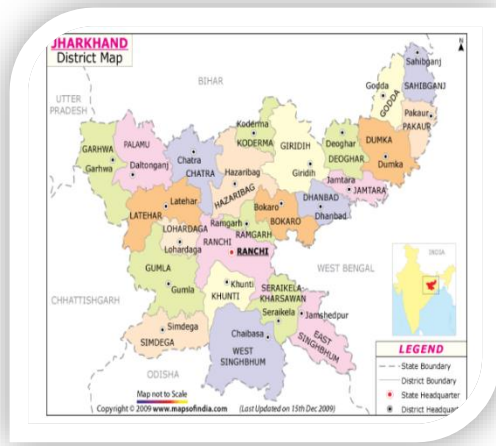
झारखण्ड भारत का 28वां राज्य है, जो अपने समृद्ध खनिज संसाधनों और वनस्पतियों के लिए प्रसिद्ध है। राज्य का नाम दो शब्दों से मिलकर बना है - "झार" जिसका अर्थ है वन, और "खंड" जिसका अर्थ है भू-भाग।

झारखण्ड एक ऐसा राज्य है जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत और आर्थिक समृद्धि के लिए जाना जाता है। झारखण्ड की राजधानी रांची है, जो एक महत्वपूर्ण शहर है और झारखण्ड के राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में कार्य करता है। झारखण्ड की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से खनिज संसाधनों, कृषि और उद्योगों पर आधारित है। झारखण्ड में कई प्रमुख नदियाँ हैं, जिनमें गंगा, सोन, स्वर्णरेखा और दामोदर शामिल हैं। झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत में कई प्रमुख त्योहार, नृत्य और संगीत शामिल हैं।

झारखण्ड की स्थापना 15 नवंबर 2000 को बिहार पुनर्गठन अधिनियम के तहत हुई थी, जो महान भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर थी। राज्य अपने विशाल खनिज भंडार के लिए जाना जाता है, जिसमें यूरेनियम, अभ्रक, बॉक्साइट, ग्रेनाइट, सोना, चांदी, ग्रेफाइट, मैग्नेटाइट, डोलोमाइट, फायरक्ले, क्वार्टज, फेल्डस्पार, कोयला (भारत का 32%), लोहा, तांबा (भारत का 25%) शामिल हैं।

झारखण्ड की वनस्पतियों और जंगलों का क्षेत्रफल राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 29% है, जो भारत में सबसे अधिक है। राज्य की राजधानी रांची है, और इसके 24 जिले हैं। झारखण्ड की आधिकारिक भाषा हिंदी है, और इसकी स्थानीय भाषाओं में खोरठा, हो, नागपुरी, बंगाली शामिल हैं।

झारखण्ड राज्य के बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य (2011 की जनगणना के अनुसार):



जनसंख्या और लिंग अनुपात

- झारखण्ड की कुल जनसंख्या 32,988,134 है।
- पुरुष जनसंख्या 16,930,315 है।
- महिला जनसंख्या 16,057,819 है।
- जनसंख्या का घनत्व 414 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।

प्रशासनिक विभाजन

- झारखण्ड में 5 प्रशासनिक विभाजन हैं।
- राज्य में 24 जिले हैं।
- उप-विभाजनों की संख्या 38 है।
- ब्लॉकों की संख्या 264 है।

भौगोलिक विवरण

- झारखण्ड का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 79.70 लाख हेक्टेयर है।
- राज्य में गांवों की संख्या 32,620 है।
- राज्य राजमार्गों की कुल लंबाई 6,880 किलोमीटर है।

1. इतिहास

झारखण्ड का इतिहास बहुत पुराना और समृद्ध है, जो पाषाण युग से लेकर आधुनिक काल तक फैला हुआ है।

प्रागैतिहासिक काल

इस क्षेत्र में मध्यपाषाण और नवपाषाण काल के पत्थर के उपकरण और माइक्रोलिथ की खोज की गई है। छोटा नागपुर पठार में ताम्रपाषाण काल के तांबे के उपकरण भी मिले हैं। यह क्षेत्र ईसा पूर्व दूसरी सहस्राब्दी के मध्य में लौह युग में प्रवेश कर गया।

प्राचीन काल

महाभारत में इस क्षेत्र को कर्क खंड कहा गया था। यह क्षेत्र मगध और अंग का हिस्सा था। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान नंद साम्राज्य ने इस क्षेत्र पर शासन किया था। मौर्य काल में, इस क्षेत्र पर कई राज्यों का शासन था, जिन्हें सामूहिक रूप से अटविका (वन) राज्यों के रूप में जाना जाता था। ये विजित राज्य अशोक के विस्तारवादी शासनकाल (लगभग 232 ईसा पूर्व) के दौरान मौर्य साम्राज्य के आधिपत्य में आ गए।

मध्य काल

7वीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेनसांग इस क्षेत्र से गुजरे थे। उन्होंने कर्णसुवर्ण राज्य का वर्णन किया और शशांक को शासक के रूप में दर्शाया। यह क्षेत्र पाल साम्राज्य का भी हिस्सा था। भीम कर्ण मध्यकाल में नागवंशी राजा थे जिन्होंने सरगुजा के रक्सेल राजवंश को हराया।

आधुनिक काल

मध्यकाल के अंत और आधुनिक काल की शुरुआत तक, यह क्षेत्र कई राजवंशों के शासन के अधीन था, जिनमें नागवंशी, खयारवाला, रामगढ़ राज, रक्सेल, चेरो, राज धनवार और कोडरमा के खड़गडीहा जमींदारी सम्पदा, गादी पालगंज और लेडो गादी शामिल थे।

झारखण्ड की स्थापना

1947 में भारतीय स्वतंत्रता के बाद, इस क्षेत्र को मध्य प्रदेश, ओड़िशा और बिहार के नए राज्यों के बीच विभाजित किया गया था। 2000 में बिहार पुनर्गठन अधिनियम के पारित होने के बाद, झारखण्ड एक नए भारतीय राज्य के रूप में स्थापित हुआ।



राज्य पशु: हाथी (Elephas Maximus Indicus)



राज्य पक्षी: कोयल (Eudynamys Scolopaceus)



राज्य पुष्प: पलाश (Butea monosperma)



राज्य वृक्ष: साल (Shorea robusta)

2. भौगोलिक संरचना

झारखण्ड एक पूर्वी भारतीय राज्य है, जो अपनी विविध भौगोलिक संरचना और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ झारखण्ड के भौगोलिक और वातावरणीय पहलुओं का विस्तृत विवरण दिया गया है:

झारखण्ड की सीमाएँ बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ से लगती हैं। राज्य का कुल क्षेत्रफल लगभग 79,714 वर्ग किलोमीटर है। झारखण्ड की भौगोलिक संरचना में कई पहाड़ियाँ, पठार और नदियाँ शामिल हैं।

पहाड़ियाँ और पठार

झारखण्ड में कई महत्वपूर्ण पहाड़ियाँ और पठार हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:

- छोटा नागपुर पठार: यह पठार झारखण्ड के अधिकांश हिस्से में फैला हुआ है।
- रांची पठार: यह पठार रांची जिले में स्थित है।
- हजारीबाग पठार: यह पठार हजारीबाग जिले में स्थित है।
- कोडरमा पठार: यह पठार कोडरमा जिले में स्थित है।

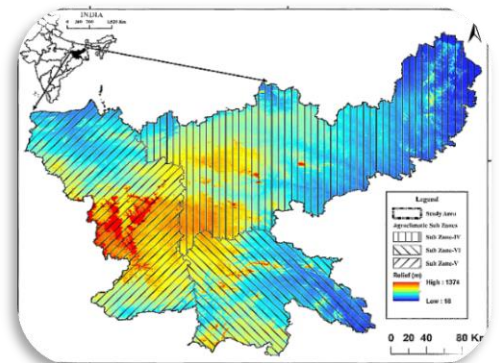
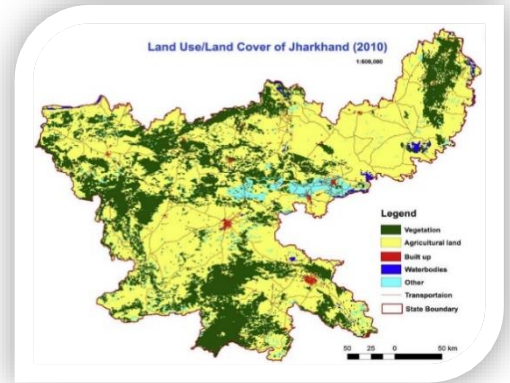
नदियाँ : झारखण्ड में कई महत्वपूर्ण नदियाँ हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं:

- गंगा नदी: यह नदी झारखण्ड की उत्तरी सीमा से लगती है।
- दामोदर नदी: यह नदी झारखण्ड के दक्षिणी हिस्से से होकर गुजरती है।
- स्वर्णरेखा नदी: यह नदी झारखण्ड के पूर्वी हिस्से से होकर गुजरती है।
- सुबर्णरेखा नदी: यह नदी झारखण्ड के दक्षिणी हिस्से से होकर गुजरती है।

वातावरणीय परिस्थितियाँ : झारखण्ड की वातावरणीय परिस्थितियाँ गर्मियों में गर्म और शीतकाल में शीतल रहती हैं। राज्य में वर्षा की मात्रा अधिक होती है, जो कृषि के लिए अनुकूल है।

तापमान :

झारखण्ड की जलवायु परिवर्तनशील होती है, जिसमें ठंड, गर्मी, मानसून और शीतकालीन मौसम शामिल हैं। नवंबर से फरवरी तक का समय सबसे सुखद मौसम होता है, जब तापमान मध्यम रहता है और पर्यटन और आउटडोर गतिविधियों के लिए आदर्श होता है। मार्च से जून तक का समय गर्मी का मौसम होता है, जब तापमान बहुत अधिक हो जाता है और मई का महीना सबसे गर्म होता है। जुलाई से सितंबर तक का समय मानसून का मौसम होता है, जब भारी वर्षा होती है और कृषि के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है। झारखण्ड में वर्षा की मात्रा अधिक होती है, जो कृषि के लिए अनुकूल है। राज्य में औसत वर्षा 1,400 मिमी होती है। झारखण्ड की मिट्टी कृषि के लिए अनुकूल है, जिसमें जलोढ़ मिट्टी, लाल मिट्टी और काली मिट्टी शामिल हैं।



3. पर्यटन

वैद्यनाथ मन्दिर, देवघर

वैद्यनाथ मंदिर, देवघर झारखण्ड का एक प्रमुख हिंदू तीर्थ स्थल है, जो भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर देवघर शहर में स्थित है, जो झारखण्ड के देवघर जिले में आता है। वैद्यनाथ मंदिर का इतिहास बहुत पुराना है, जो लगभग 8वीं शताब्दी का माना जाता है। वैद्यनाथ मंदिर भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जो हिंदू धर्म में बहुत पवित्र माना जाता है। यह मंदिर अपनी विशेष वास्तुकला और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है। हर वर्ष सावन के महीने में सावण मेला लगता है जिसमें लाखों श्रद्धालु "बोल-बम!" "बोल-बम!" का जयकारा लगाते हुए बाबा भोलेनाथ के दर्शन करने आते हैं। ये सभी श्रद्धालु अजगैबीनाथ मंदिर, सुल्तानगंज से पवित्र गंगा का जल लेकर लगभग सौ किलोमीटर की अत्यन्त कठिन पैदल यात्रा कर बाबा को जल चढाते हैं।



छिन्नमस्तिका मन्दिर, रजरप्पा, रामगढ़

छिन्नमस्तिका मंदिर झारखण्ड के रामगढ़ जिले में स्थित एक प्रमुख हिंदू मंदिर है, जो देवी छिन्नमस्तिका को समर्पित है। यह मंदिर अपनी विशेष वास्तुकला और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है। मंदिर में देवी छिन्नमस्तिका की प्रतिमा स्थापित है, जो हिंदू धर्म में बहुत पवित्र मानी जाती है। यहाँ पूजा-अर्चना की विशेष व्यवस्था है, जिसमें पुजारी और भक्तगण देवी छिन्नमस्तिका की पूजा करते हैं। मंदिर में कई त्योहार और उत्सव मनाए जाते हैं, जिनमें नवरात्रि, दुर्गा पूजा, और काली पूजा जैसे त्योहार शामिल हैं। छिन्नमस्तिका मंदिर का इतिहास बहुत पुराना है, जो लगभग 18वीं शताब्दी का माना जाता है। यह मंदिर राजा बिक्रम सिंह द्वारा बनाया गया था, जो रामगढ़ के राजा थे।



पारसनाथ पहाड़ी, गिरिडीह

पारसनाथ पहाड़ी गिरिडीह जिले में स्थित एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है। पारसनाथ पहाड़ी की ऊंचाई लगभग 4,430 फीट है, जो झारखण्ड की सबसे ऊंची चोटी है। यहाँ से पूरे क्षेत्र का सुंदर दृश्य देखा जा सकता है। पारसनाथ पहाड़ी पर कई जैन मंदिर और अन्य धार्मिक स्थल हैं, जो यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र हैं। पारसनाथ अपनी प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है।



नेतरहाट, लातेहार

नेतरहाट झारखण्ड के लातेहार जिले में स्थित एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण के लिए जाना जाता है। यह स्थल लगभग 3,622 फीट की ऊंचाई पर स्थित है, जो झारखण्ड के पठारी क्षेत्र में आता है। नेतरहाट की विशेषता यह है कि यहाँ से सूर्योदय और सूर्यास्त का सुंदर दृश्य देखा जा सकता है, जो पर्यटकों के लिए एक आकर्षक अनुभव है। नेतरहाट में कई प्राकृतिक स्थल हैं, जिनमें झीलें, झरने, और वनस्पतियों से भरे जंगल शामिल हैं। यह स्थल झारखण्ड के पर्यटन मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।



नेतरहाट में सूर्यास्त

लोध जलप्रपात, लातेहार

रांची से लगभग 120 किलोमीटर दूर लातेहार जिले के महुआडांड अनुमंडल में लोध जलप्रपात है। महुआडांड से 15 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर-पश्चिम दिशा में अवस्थित यह जलप्रपात राज्य का सबसे ऊंचा जलप्रपात है। बूढ़ा नदी पर अवस्थित होने के कारण इसे बूढ़ा घाघ भी कहते हैं। यहाँ तकरीबन 143 मीटर की ऊंचाई से पानी नीचे गिरता है। इतनी ऊंचाई से गिरते पानी को देखने पर लगता है कि यहां चांदी की कोई परत पड़ी हो। जिस स्थान पर पानी गिरता है। लोध जलप्रपात के आसपास साल (सखुआ) के घने जंगल हैं। लातेहार का लोध फॉल महुआडांड प्रखंड से 17 किमी दूर है। नेतरहाट से 62 किमी की दूरी पर है। लातेहार से 107 किमी की दूरी पर है। रांची से 217 किमी और मेदिनीनगर से 117 किमी दूर है।



दशम जलप्रपात, रांची

दशम जलप्रपात रांची जिले में स्थित एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण के लिए जाना जाता है। यह जलप्रपात लगभग 144 फीट की ऊंचाई से गिरता है, जो एक सुंदर और आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करता है। दशम जलप्रपात के आसपास का क्षेत्र वनस्पतियों से भरा हुआ है, जो यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता को और भी बढ़ाता है। यह जलप्रपात पिकनिक और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए एक आदर्श स्थल है, जो रांची शहर से लगभग 40 किमी की दूरी पर स्थित है।



पतरातू, रामगढ़

पतरातू झारखण्ड के रामगढ़ जिले में स्थित एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। यह स्थल लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर रामगढ़ शहर से स्थित है और झारखण्ड के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। पतरातू जलाशय और पतरातू डैम यहाँ के प्रमुख आकर्षण हैं, जो यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को और भी बढ़ाते हैं। यह स्थल पिकनिक और वन्यजीव दर्शन के लिए भी एक आदर्श स्थल है, जहाँ पर्यटक अपने परिवार और मित्रों के साथ पिकनिक मना सकते हैं और वन्यजीवों को देख सकते हैं।



मैक्लुस्कीगंज, झारखण्ड

मैक्लुस्कीगंज झारखण्ड का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। यह स्थल झारखण्ड के रांची जिले में स्थित है, जो लगभग 62 किमी की दूरी पर है। मैक्लुस्कीगंज का इतिहास बहुत पुराना है, जो लगभग 19वीं शताब्दी का माना जाता है। यह स्थल अंग्रेजों के शासनकाल में एक प्रमुख हिल स्टेशन के रूप में विकसित किया गया था, जो गर्मियों में आराम करने के लिए एक आदर्श स्थल था। मैक्लुस्कीगंज अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है, जिसमें हरे-भरे जंगल, झीलें, और झरने शामिल हैं। इसका ऐतिहासिक महत्व भी बहुत अधिक है, जिसमें अंग्रेजों के शासनकाल के अवशेष शामिल हैं। मैक्लुस्कीगंज में कई पर्यटन गतिविधियाँ हैं, जिनमें ट्रेकिंग, पिकनिक, और वन्यजीव दर्शन शामिल हैं।



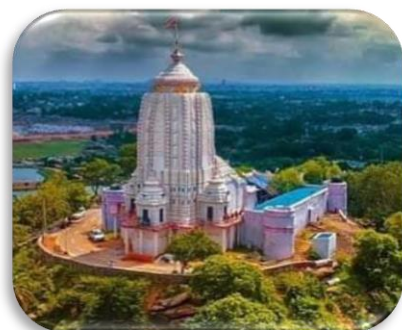
बेतला राष्ट्रीय उद्यान

बेतला राष्ट्रीय उद्यान झारखण्ड के लातेहार जिले में स्थित एक प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और जैव विविधता के लिए जाना जाता है। यह उद्यान लगभग 226 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है, जो झारखण्ड के पठारी क्षेत्र में आता है। बेतला राष्ट्रीय उद्यान का इतिहास बहुत पुराना है, जो लगभग 1974 का माना जाता है। यह उद्यान पहले एक वन्यजीव अभयारण्य के रूप में स्थापित किया गया था, जो बाद में 1989 में एक राष्ट्रीय उद्यान में परिवर्तित हो गया था।



जगन्नाथ मंदिर

झारखंड के रांची शहर में स्थित जगन्नाथ मंदिर एक प्रमुख हिंदू तीर्थस्थल है, जो भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा को समर्पित है। यह मंदिर अपनी सुंदर वास्तुकला और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर की विशेषता यह है कि यह ओडिशा के पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर की तरह ही बनाया गया है, जो भगवान जगन्नाथ का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर की स्थापना 17वीं शताब्दी में हुई थी, जब यहाँ के राजा ने भगवान जगन्नाथ की मूर्ति की स्थापना की थी। तब से, यह मंदिर झारखंड के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल बन गया है।



त्रिकूट पर्वत, देवघर

झारखंड के देवघर जिले में स्थित त्रिकूट पर्वत एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह पर्वत लगभग 2470 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और इसकी चोटी से आप देवघर शहर और उसके आसपास के क्षेत्रों का सुंदर दृश्य देख सकते हैं। त्रिकूट पर्वत का महत्व न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय स्थल भी है। यहाँ पर आप विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे, जानवर और पक्षी देख सकते हैं। त्रिकूट पर्वत का नाम तीन चोटियों के कारण पड़ा है, जो इस पर्वत की विशेषता है। यह पर्वत झारखंड के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल भी है, क्योंकि यहाँ पर कई प्रमुख मंदिर और धार्मिक स्थल स्थित हैं। इनमें से सबसे प्रमुख मंदिर बैद्यनाथ धाम मंदिर है, जो भगवान शिव को समर्पित है।



4. संस्कृति

झारखण्ड की संस्कृति बहुत ही समृद्ध और विविध है, जो यहाँ के आदिवासी समुदायों की परंपराओं और रीति-रिवाजों से प्रभावित है। झारखण्ड की संस्कृति में कई प्रमुख तत्व शामिल हैं।

झारखण्ड की भाषाएँ:

हिन्दी - झारखण्ड की राजकीय भाषा है।

उर्दू - झारखण्ड की द्वितीय राजकीय भाषा है।

नागपुरी - 1947 तक झारखण्ड की राजभाषा थी।

मुंडारी - पश्चिमी सिंहभूम और गुमला में बोली जाती है।

हो - आदिवासी भाषा है।

कुड़ुख - उरांव जनजाति बोलती है।

संथाली - झारखण्ड की सबसे प्रचलित भाषा है।

भूमिज - आदिवासी भाषा है।

खड़िया - आदिवासी भाषा है।

खोरठा - उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल और संथाल परगना में बोली जाती है।

झारखण्ड के त्योहार: झारखण्ड के त्योहारों में प्रकृति की महत्ता देखने को मिलती है। इनके पर्व-त्योहार एवं उत्सवों में सूर्य-चंद्रमा के साथ-साथ जल और जंगल की भी काफी अहमियत होती है।

सरहुल: यह वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जो नए साल की शुरुआत का प्रतीक है। सरहुल त्योहार में झारखण्ड के आदिवासी समुदायों द्वारा विशेष भोजन और पेय का आयोजन किया जाता है, जो इस त्योहार को और भी स्वादिष्ट और आनंददायक बनाता है।

करम: करम पूजा करम त्योहार की एक प्रमुख रस्म है, जिसमें झारखण्ड के आदिवासी समुदायों द्वारा करम देवता की पूजा की जाती है।

टुमू पर्व: यह मुख्य रूप से झारखण्ड के बुंदू, तमाड़ और रायडीह क्षेत्र में मनाया जाता है। यह सर्दियों के दौरान पौष महीने के आखिरी दिन मनाया जाता है।

सोहराई: यह पशुओं के प्रति श्रद्धा से जुड़ा होता है। इस पर्व के दिन लोग अपने पशुओं को नदी में स्नान कराते हैं और फिर पशु का श्रृंगार करते हैं।



झारखण्ड का संगीत और नृत्य: झारखण्ड का संगीत और नृत्य बहुत ही समृद्ध और विविध है, जो यहाँ के आदिवासी समुदायों की परंपराओं से प्रभावित है।

झुमड़: यह झारखण्ड का एक लोकप्रिय लोक नृत्य है, जो फसल और त्योहारों के मौसम में किया जाता है, जिसमें लोग हाथ पकड़कर गोलाकार नृत्य करते हैं।

डोमकच: करम पूजा करम त्योहार की एक प्रमुख रस्म है, जिसमें झारखण्ड के आदिवासी समुदायों द्वारा करम देवता की पूजा की जाती है।

पाइका: यह मुख्य रूप से झारखण्ड के बुंदू, तमाड़ और रायडीह क्षेत्र में मनाया जाता है। यह सर्दियों के दौरान पौष महीने के आखिरी दिन मनाया जाता है।

छऊ: यह पशुओं के प्रति श्रद्धा से जुड़ा होता है। इस पर्व के दिन लोग अपने पशुओं को नदी में स्नान कराते हैं और फिर पशु का श्रृंगार करते हैं।

लोकगीत: झारखण्ड के लोकगीत के कुछ लोकप्रिय रूपों में झूमर गीत, सोहराई गीत, करमा गीत और फगुआ गीत शामिल हैं।

वाद्य यंत्र: मांदर, ढोल, बंसी, नगाड़ा, ढाक, शहनाई और खरताल जैसे वाद्य यंत्रों का उपयोग किया जाता है।



झारखण्ड के मुख्य व्यंजन: झारखण्ड के व्यंजन अपने अनोखे स्वाद और पारंपरिक तरीकों से बनाए जाने के लिए जाने जाते हैं।

ढुस्का: यह उड़द की दाल, चना दाल और चावल से बनाया जाता है, जिसे पीसकर पेस्ट बनाया जाता है और फिर तेल में तला जाता है।

रोहद हकू: यह तली हुई मछली का व्यंजन है। मछली को धूप में सुखाया जाता है और फिर तेल में तला जाता है।

बांस की टहनियाँ: झारखण्ड में बांस की टहनियों का उपयोग सब्जी के रूप में किया जाता है।

छिलका: यह अरवा चावल से बनाई जाती है, जिसे रात भर भिगोकर, मिट्टी के ढक्कन में कोयले की आंच पर पतला बनाया जाता है।

आरू सब्जी: यह केवल झारखण्ड में पाई जाने वाली जड़ वाली सब्जी से बनाई जाती है।



झारखण्ड का पारंपरिक परिधान

झारखण्ड में पारंपरिक परिधानों की एक समृद्ध विविधता है, जो राज्य की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है। महिलाओं के पारंपरिक परिधानों में पंची, पैरहन, साड़ी और विभिन्न प्रकार के आभूषण शामिल हैं। पुरुषों के पारंपरिक परिधानों में भगवान, धोती, कुर्ता और आधुनिक परिधान शामिल हैं।

महिलाओं के पारंपरिक परिधान:

1. पंची: यह तीन मीटर लंबा, टखने तक का स्कर्ट होता है जिसे महिला की कमर के चारों ओर लपेटा जाता है।
2. साड़ी: महिलाएं अक्सर टसर रेशम से बनी साड़ियों से खुद को सजाती हैं, जो अपने मिट्टी के रंगों और प्राकृतिक रूपांकनों के लिए जानी जाती हैं।
3. आभूषण: आदिवासी आभूषण भी बहुत लोकप्रिय हैं, जिनमें चांदी के आभूषण शामिल हैं।
4. खोंगसो: बालों को सजाने के लिए आदिवासी महिलाएं चांदी से बने खोंगसो का प्रयोग करती हैं।
5. कंपस: कानों में यह कंपस पहनती हैं जो पूरे कान को ढंक लेता है।
6. मठिया: महिलाएं हाथों में चूड़ी कि जगह चांदी की मठिया पहनती हैं।
7. झटिया: पैरों के आभूषण में झटिया है जो पैरों के अंगलियों में पहनी जाती है।
8. पैरी: पैरी काफी भारी होती है और यह काफी आवाज करता है।



पुरुषों के पारंपरिक परिधान:

1. भगवान: पुरुष पारंपरिक रूप से भगवान पहनते हैं।
2. धोती और कुर्ता: पुरुष धोती और कुर्ता भी पहनते हैं।
3. आधुनिक परिधान: इस क्षेत्र में आधुनिक परिधान भी आम हैं जिनमें पुरुषों के लिए धोती, कुर्ता-पायजामा और शर्ट शामिल हैं।

इन पारंपरिक परिधानों के अलावा, झारखण्ड में कई अन्य पारंपरिक परिधान भी हैं जो विभिन्न समुदायों और क्षेत्रों में पहने जाते हैं।

5. झारखण्ड में खनिज

झारखण्ड एक ऐसी भूमि है जो प्राकृतिक रूप से खनिज संसाधनों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है। झारखण्ड राज्य देश के खनिज मानचित्र पर एक मजबूत स्थिति का आनंद लेता है। दुनिया में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जो इतने करीबी वातावरण में इतने विशाल खनिज संसाधनों से संपन्न हो। राज्य में ऊर्जा, फेरस, नॉन-फेरस, उर्वरक, औद्योगिक, रिफ़्रेक्टरी, परमाणु, रणनीतिक, कीमती और अर्ध-कीमती खनिज समूहों के संभावित जमाव हैं। राज्य 79,714 वर्ग किलोमीटर भौगोलिक क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें 29.61% वन क्षेत्र है और भारत के कुल खनिज संसाधनों का लगभग 40% हिस्सा है। झारखण्ड कोयला भंडार में पहला स्थान, लोहे में दूसरा स्थान, तांबा अयस्क भंडार में तीसरा स्थान, बॉक्साइट भंडार में सातवां स्थान हासिल है, और यह प्राइम कोकिंग कोयला का एकमात्र उत्पादक है। वर्तमान में झारखण्ड राज्य विभिन्न प्रकार के खनिजों का लगभग 160 मिलियन टन उत्पादन कर रहा है, जिसकी कीमत लगभग 15,000 करोड़ रुपये है, और खनिज राजस्व लगभग 3,500 करोड़ रुपये पैदा कर रहा है। कोयला, लोहा अयस्क, बॉक्साइट, यूरेनियम, चूना पत्थर, डोलोमाइट, पायरोक्सीनाइट, क्वार्ट्ज और क्वार्ट्जाइट पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। चीनी मिट्टी, फायरक्ले, मैग्नेटाइट, ग्रेफाइट, कायनाइट, फेल्डस्पार, मीका और सजावटी पत्थरों के जमाव भी पर्याप्त मात्रा में हैं। एंडालुसाइट, मैंगनीज, क्रोमाइट, बेरिल, टैल्क, गोल्ड, बेंटोनाइट के जमाव भी कम मात्रा में उपलब्ध हैं।

कोयला: झारखण्ड कोयला का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है, जिसमें देश के कुल कोयला भंडार का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा है। झारखण्ड के धनबाद, गिरिडीह, हजारीबाग और रामगढ़ जिलों में कोयला की खानें हैं, जो देश की बिजली उत्पादन, इस्पात और अन्य उद्योगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। झारखण्ड का कोयला उच्च गुणवत्ता वाला होता है, जो बिजली उत्पादन, इस्पात उत्पादन और अन्य उद्योगों में उपयोग किया जाता है। झारखण्ड कोयला उत्पादन में देश का सबसे बड़ा योगदानकर्ता है।

लौह अयस्क: झारखण्ड लौह अयस्क का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है, जिसमें देश के कुल लौह अयस्क भंडार का लगभग 19% हिस्सा है। झारखण्ड के सिंहभूम जिले का दक्षिणी भाग लौह अयस्क का प्रासि क्षेत्र है, जहां 48 किलोमीटर लंबी पट्टी के रूप में लौह अयस्क की पेट्टी है। यह पट्टी विश्व के सबसे बड़े लौह भंडार के रूप में मानी जाती है। झारखण्ड में उच्च कोटि का हेमेटाइट वर्ग का लौह अयस्क उत्पादित किया जाता है, जिसमें लोहे के अंश 60% से 68% तक होते हैं।

अभ्रक: झारखण्ड अभ्रक (माइका) का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है, जिसमें देश के कुल अभ्रक भंडार का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा है। झारखण्ड के गिरिडीह, हजारीबाग और कोडरमा जिलों में अभ्रक की खानें हैं, जो देश की विद्युत, इलेक्ट्रॉनिक्स और निर्माण उद्योगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। झारखण्ड का अभ्रक उच्च गुणवत्ता वाला होता है, जो विद्युत उपकरणों, इलेक्ट्रॉनिक्स और निर्माण सामग्री में उपयोग किया जाता है।

बॉक्साइट: झारखण्ड बॉक्साइट का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है, जिसमें देश के कुल बॉक्साइट भंडार का लगभग 45 प्रतिशत हिस्सा है। झारखण्ड के लोहरदगा, गुमला, पलामू और पश्चिमी सिंहभूम जिलों में बॉक्साइट की खानें हैं, जो देश की एल्युमीनियम और अलॉय स्टील उद्योगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। झारखण्ड का बॉक्साइट उच्च गुणवत्ता वाला होता है, जो एल्युमीनियम उत्पादन, अलॉय स्टील उत्पादन और अन्य उद्योगों में उपयोग किया जाता है।

यूरेनियम: झारखण्ड यूरेनियम का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है, जिसमें देश के कुल यूरेनियम भंडार का लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा है। झारखण्ड में यूरेनियम की खोज 1950 के दशक में हुई थी और तब से यहाँ पर कई यूरेनियम खानें स्थापित की गई हैं। झारखण्ड के जादूगोड़ा, तुरामडीह और बागजाता में यूरेनियम की खानें हैं, जो देश की परमाणु ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पाइराइट: झारखण्ड पाइराइट (लोहे का पायराइट) का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है, जिसमें देश के कुल पाइराइट भंडार का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा है। झारखण्ड के हजारीबाग, गिरिडीह और धनबाद जिलों में पाइराइट की खानें हैं, जो देश की इस्पात और लोहा उद्योग की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। झारखण्ड का पाइराइट उच्च गुणवत्ता वाला होता है, जो इस्पात उत्पादन में उपयोग किया जाता है।

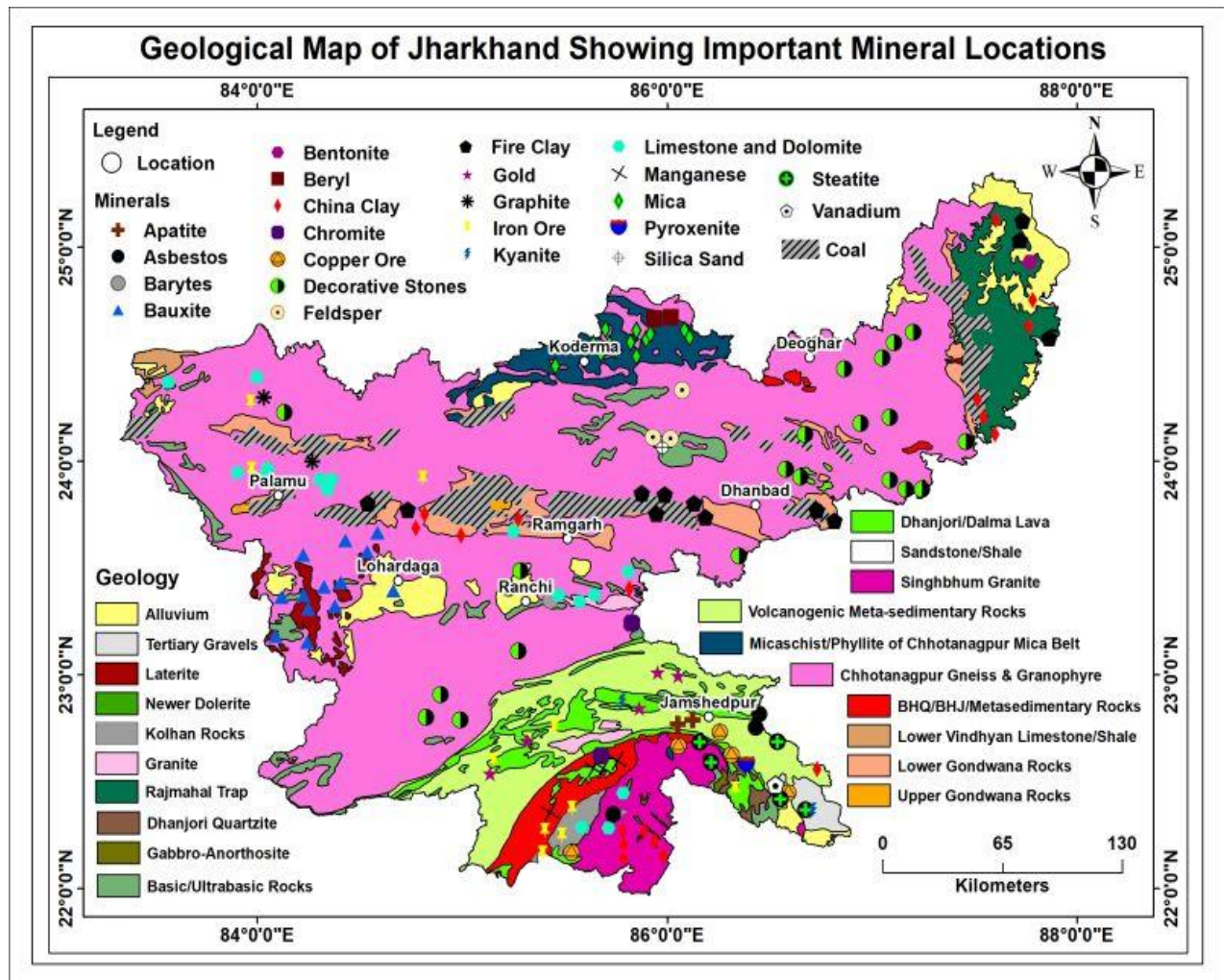
ग्रेफाइट: झारखण्ड ग्रेफाइट का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है, जिसमें देश के कुल ग्रेफाइट भंडार का लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा है। झारखण्ड के पलामू, लातेहार और गुमला जिलों में ग्रेफाइट की खानें हैं, जो देश की इस्पात, लोहा और इलेक्ट्रिकल उद्योगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। झारखण्ड का ग्रेफाइट उच्च गुणवत्ता वाला होता है, जो इलेक्ट्रिकल और इस्पात उद्योगों में उपयोग किया जाता है।

तांबा: झारखण्ड तांबा का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है, जिसमें देश के कुल तांबा भंडार का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा है। झारखण्ड के हजारीबाग, गिरिडीह और सिंहभूम जिलों में तांबा की खानें हैं, जो देश की विद्युत, इलेक्ट्रॉनिक्स और उद्योगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। झारखण्ड का तांबा उच्च गुणवत्ता वाला होता है, जो विद्युत तारों, इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य उद्योगों में उपयोग किया जाता है।

कोकिंग कोल: झारखण्ड कोकिंग कोल (कोकिंग कोयला) का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है, जिसमें देश के कुल कोकिंग कोल भंडार का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा है। झारखण्ड के धनबाद, गिरिडीह, हजारीबाग और रामगढ़ जिलों में कोकिंग कोल की खानें हैं, जो देश की इस्पात और लोहा उद्योगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। झारखण्ड का कोकिंग कोल उच्च गुणवत्ता वाला होता है, जो इस्पात उत्पादन में उपयोग किया जाता है।

डोलोमाइट: झारखण्ड में डोलोमाइट एक महत्वपूर्ण खनिज है, जो अपने विशिष्ट गुणों के कारण विभिन्न उद्योगों में उपयोग किया जाता है। डोलोमाइट मुख्य रूप से चूना पत्थर में मैग्नीशियम की उपस्थिति के कारण बनता है, और जब यह अनुपात 45% से अधिक हो जाता है, तो इसे शुद्ध डोलोमाइट कहा जाता है। झारखण्ड में डोलोमाइट के भंडार पलामू, गढ़वा, और सिंहभूम जिलों में पाए जाते हैं। राज्य में डोलोमाइट का उत्पादन मुख्य रूप से लोहा-इस्पात उद्योग में किया जाता है, जहां इसका उपयोग इस्पात उत्पादन में किया जाता है। इसके अलावा, डोलोमाइट का उपयोग उर्वरक, शीशा, और मिश्र धातु उद्योगों में भी किया जाता है।

क्वार्टज: झारखण्ड में क्वार्टज एक महत्वपूर्ण खनिज है, जो अपने विशिष्ट गुणों के कारण विभिन्न उद्योगों में उपयोग किया जाता है। राज्य में क्वार्टज के भंडार पलामू, गढ़वा, और सिंहभूम जिलों में पाए जाते हैं। इसका उपयोग सीमेंट, रिफेक्ट्री, बिजली उद्योग, और अन्य मिश्र धातुओं के निर्माण में किया जाता है। झारखण्ड में क्वार्टज के संरक्षण और टिकाऊ उपयोग के लिए सरकार द्वारा विभिन्न पहल की जा रही हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि झारखण्ड के खनिज संसाधनों का उपयोग आने वाली पीढ़ियों के लिए भी किया जा सके।



6. झारखण्ड में उपज

प्रमुख वनस्पतियाँ

झारखण्ड के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 29% वन आवरण के अंतर्गत है। झारखण्ड की वनस्पतियों में सबसे महत्वपूर्ण पेड़ों में से कुछ हैं साल, गंभर, कटहल, जामुन, केंदू, शीशम, कत्था, पेसर, लाख, महुआ, आम, बहेड़ा, आसन और बांस। झारखण्ड में पर्यटन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा झारखण्ड में वनस्पतियों और सदाबहार जंगलों की विशाल विविधता के कारण ही आता है। झारखण्ड की वनस्पतियों का महत्व न केवल आर्थिक और औषधीय दृष्टिकोण से है, बल्कि पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी है। राज्य के वनों में पाई जाने वाली वनस्पतियाँ जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने, मिट्टी का क्षरण रोकने, और जानवरों के लिए आवास प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अलावा, झारखण्ड की वनस्पतियों का उपयोग स्थानीय स्तर पर किया जाता है, जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।

झारखण्ड में प्रमुख फसलें, सब्जियाँ एवं फलों का उत्पादन, और उनकी उत्पाद आवश्यकताएँ

झारखण्ड एक कृषि प्रधान राज्य है, जहाँ विभिन्न प्रकार की **फसलें** उगाई जाती हैं। राज्य की प्रमुख फसलें चावल, गेहूँ, मक्का, जौ और बाजरा हैं। चावल का उत्पादन व्यापक रूप से हजारीबाग, गिरिडीह और कोडरमा जिलों में किया जाता है, जबकि गेहूँ का उत्पादन रांची, जमशेदपुर और धनबाद जिलों में किया जाता है। मक्का का उत्पादन भी हजारीबाग, गिरिडीह और कोडरमा जिलों में किया जाता है। झारखण्ड में विभिन्न प्रकार की **सब्जियाँ** उगाई जाती हैं, जिनमें आलू, टमाटर, प्याज, बंदगोभी, लेडीफिंगर, मटर और अन्य सब्जियाँ प्रमुख हैं। झारखण्ड में विभिन्न प्रकार के **फल** उगाए जाते हैं, जिनमें आम, केला, लीची, पपीता, अंगूर और संतरा प्रमुख हैं।

झारखण्ड में फसल उत्पादन के लिए जलवायु, मिट्टी और सिंचाई महत्वपूर्ण कारक हैं। राज्य में गर्मियों में तापमान अधिक होता है, जबकि सर्दियों में तापमान कम होता है। झारखण्ड में विभिन्न प्रकार की मिट्टी पाई जाती है, जैसे कि जलोढ़ मिट्टी, काली मिट्टी और लाल मिट्टी। राज्य में विभिन्न प्रकार की सिंचाई प्रणालियाँ पाई जाती हैं, जैसे कि नहर सिंचाई, ट्यूबवेल सिंचाई और वर्षा सिंचाई।



झारखण्ड में रेशम उत्पादन

झारखण्ड भारत में तसर रेशम का एक प्रमुख उत्पादक है, जहाँ देश के 70% तसर रेशम का उत्पादन होता है। झारखण्ड में रेशम उत्पादन एक महत्वपूर्ण गतिविधि है, जो जंगली रेशम कीटों से प्राप्त होता है। झारखण्ड का संथाल परगना क्षेत्र तसर रेशम उत्पादन में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है। तसर रेशम उत्पादन ग्रामीण और आदिवासी समुदायों को आजीविका के अवसर प्रदान करता है, जो रेशम कीट पालन और बुनाई में शामिल हैं। झारखण्ड में तसर रेशम के अलावा, मुलबरी, एरी और मुगा रेशम का भी उत्पादन किया जाता है। झारखण्ड के विभिन्न जिलों में तसर रेशम का उत्पादन किया जाता है, जिनमें सिंहभूम (पश्चिम), सराइकेला, सिंहभूम (पूर्व), दुमका, पाकुड़, गोड्डा, साहेबगंज, धनबाद, गिरिडीह, लातेहार, पलामू, गरवा और सिमडेगा शामिल हैं। मुलबरी रेशम का उत्पादन लातेहार, गुमला, रांची, खूंटी, पाकुड़ और साहेबगंज जिलों में किया जाता है।



7. झारखण्ड में शिक्षा

झारखण्ड, जिसे अपने समृद्ध खनिज संसाधनों के लिए जाना जाता है, पूर्वी भारत में एक शैक्षिक केंद्र के रूप में भी उभर रहा है। वर्षों से, राज्य ने प्राथमिक से लेकर उच्च और तकनीकी शिक्षा तक सभी स्तरों पर शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा झारखण्ड में सरकारी और निजी स्कूलों के माध्यम से प्रबंधित की जाती है। झारखण्ड में उच्च माध्यमिक शिक्षा सीबीएसई, आईसीएसई और झारखण्ड अकादमिक काउंसिल (जेएससी) बोर्डों का पालन करती है। कई सरकारी और निजी स्कूल विज्ञान, वाणिज्य और कला धाराओं के साथ 12वीं कक्षा तक शिक्षा प्रदान करते हैं। झारखण्ड में कई विश्वविद्यालय स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध कार्यक्रम प्रदान करते हैं। राज्य में विभिन्न अनुशासनों को पूरा करने वाले सार्वजनिक और निजी विश्वविद्यालय हैं। झारखण्ड अपने चिकित्सा शिक्षा बुनियादी ढांचे को मजबूत कर रहा है, जिसमें गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रशिक्षण प्रदान करने वाले संस्थान शामिल हैं। झारखण्ड एक अच्छी तरह से स्थापित शिक्षा प्रणाली के साथ एक प्रमुख शैक्षिक गंतव्य के रूप में उभर रहा है, जो छात्रों को सभी स्तरों पर शिक्षा प्रदान करता है। प्राथमिक स्कूलों से लेकर आईआईटी, आईआईएम और एम्स तक, राज्य विभिन्न विषयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। सरकारी प्रयासों और निजी निवेश के साथ, झारखण्ड पूर्वी भारत में एक प्रमुख शैक्षिक गंतव्य के रूप में उभर रहा है।

8. झारखण्ड में चिकित्सा प्रणाली

झारखण्ड में सरकारी और निजी दोनों तरह की चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिनमें मेडिकल कॉलेज, अस्पताल और स्वास्थ्य केंद्र शामिल हैं। सरकारी सुविधाओं में एम्स देवघर, राजेंद्र इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज और सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ साइकियाट्री जैसे प्रमुख संस्थान शामिल हैं, जबकि निजी विकल्पों में टाटा मेन हॉस्पिटल, मेदांता अस्पताल (रांची) जैसे अस्पताल शामिल हैं। झारखण्ड में स्वास्थ्य सेवाओं की एक विस्तृत शृंखला है, जिसमें सरकारी और निजी दोनों तरह के अस्पताल, मेडिकल कॉलेज और स्वास्थ्य केंद्र शामिल हैं। राज्य सरकार, खासकर दूर-दराज और पिछड़े क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

9. झारखण्ड के उद्योग



टाटा समूह भारत का सबसे बड़ा और सबसे पुराना कॉर्पोरेट घराना है, जिसका इतिहास 150 से अधिक वर्षों से फैला हुआ है। यह समूह विभिन्न क्षेत्रों में काम करता है, जिनमें ऑटोमोबाइल, इस्पात, आईटी, होटल, एयरलाइन और कई अन्य शामिल हैं। टाटा समूह की स्थापना 1868 में जमशेदजी टाटा ने की थी, जो एक व्यवसायी और उद्योगपति थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में कई सफल व्यवसाय शुरू किए, जिनमें टाटा स्टील, टाटा मोटर्स और टाटा पावर शामिल हैं। आज, टाटा समूह दुनिया भर में फैला हुआ है, जिसमें 100 से अधिक देशों में कारोबार है। समूह की कुल आय 100 अरब डॉलर से अधिक है, और इसमें 7 लाख से अधिक कर्मचारी काम करते हैं।

टाटा स्टील भारत की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी इस्पात उत्पादक कंपनी है, जिसका मुख्यालय मुंबई में स्थित है। यह कंपनी टाटा समूह की एक प्रमुख कंपनी है और देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करती है। टाटा स्टील की स्थापना 1907 में हुई थी और तब से यह कंपनी देश में इस्पात उत्पादन में अग्रणी है। कंपनी के पास देश भर में फैले कई इस्पात संयंत्र हैं और यह कंपनी देश की इस्पात आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

बोकारो स्टील प्लांट झारखंड के बोकारो में स्थित एक प्रमुख इस्पात संयंत्र है, जो स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) की एक इकाई है। यह संयंत्र 1964 में स्थापित किया गया था और इसकी कुल उत्पादन क्षमता 4.5 मिलियन टन प्रति वर्ष है। बोकारो स्टील प्लांट में विभिन्न प्रकार के इस्पात उत्पादों का निर्माण किया जाता है, जिनमें हॉट रोलड कॉइल, कोल्ड रोलड कॉइल, गैल्वनाइज्ड शीट और अन्य शामिल हैं। यह संयंत्र झारखंड की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करता है और रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

टाटा मोटर्स भारत की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी ऑटोमोबाइल कंपनियों में से एक है, जिसका मुख्यालय मुंबई में स्थित है। यह कंपनी टाटा समूह की एक प्रमुख कंपनी है और देश की ऑटोमोबाइल उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान करती है। टाटा मोटर्स की स्थापना 1945 में हुई थी और तब से यह कंपनी देश में विभिन्न प्रकार के वाहनों का निर्माण करती है, जिनमें यात्री कार, वाणिज्यिक वाहन और रक्षा वाहन शामिल हैं। टाटा मोटर्स की कुछ प्रमुख मॉडलों में टाटा नैनो, टाटा इंडिका, टाटा सफारी और टाटा हेक्सा शामिल हैं।

सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) भारत की एक प्रमुख कोयला खनन कंपनी है, जिसका मुख्यालय झारखंड के रांची में स्थित है। यह कंपनी कोयला इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) की एक सहायक कंपनी है और देश की कोयला आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सीसीएल की स्थापना 1975 में हुई थी और तब से यह कंपनी झारखंड और बिहार में फैले अपने कोयला खनन क्षेत्रों में कोयला का उत्पादन करती है। सीसीएल देश की सबसे बड़ी कोयला उत्पादक कंपनियों में से एक है और इसकी कुल कोयला उत्पादन क्षमता 61 मिलियन टन प्रति वर्ष है।

दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) एक वैधानिक निकाय है जो भारत के पश्चिम बंगाल और झारखंड राज्यों के दामोदर नदी क्षेत्र में दामोदर घाटी परियोजना को संचालने के लिए काम करता है, जो स्वतंत्र भारत की पहली बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना है। यह भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय के स्वामित्व में थर्मल पावर स्टेशन और हाइड्रल पावर स्टेशन दोनों का संचालन करता है। डीवीसी के पास झारखंड में कई थर्मल पावर प्लांट हैं, जिनमें चंद्रपुरा और बोकारो थर्मल पावर प्लांट प्रमुख हैं।

एसीसी लिमिटेड एक प्रमुख सीमेंट उत्पादक कंपनी है, जिसकी झारखंड में महत्वपूर्ण उपस्थिति है। कंपनी के झारखंड में कई सीमेंट संयंत्र हैं, जो राज्य की निर्माण आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एसीसी लिमिटेड की झारखंड में उपस्थिति न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था में योगदान करती है, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी प्रदान करती है।

अल्ट्राटेक सीमेंट भारत की सबसे बड़ी सीमेंट उत्पादक कंपनियों में से एक है, जिसकी झारखंड में महत्वपूर्ण उपस्थिति है। कंपनी के झारखंड में कई सीमेंट संयंत्र हैं, जो राज्य की निर्माण आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अल्ट्राटेक सीमेंट की झारखंड में उपस्थिति न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था में योगदान करती है, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी प्रदान करती है। कंपनी के झारखंड संयंत्रों में से एक जामताड़ा जिले में स्थित है, जो राज्य के पूर्वी हिस्से में स्थित है।

नुवोको विस्टास एक प्रमुख सीमेंट और भवन सामग्री उत्पादक कंपनी है, जिसकी झारखंड में महत्वपूर्ण उपस्थिति है। कंपनी के झारखंड में कई सीमेंट संयंत्र और वितरण केंद्र हैं, जो राज्य की निर्माण आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नुवोको विस्टास की झारखंड में उपस्थिति न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था में योगदान करती है, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी प्रदान करती है। कंपनी के झारखंड संयंत्रों में से एक झारखंड के रांची जिले में स्थित है।

दलमिया सीमेंट भारत की एक प्रमुख सीमेंट उत्पादक कंपनी है, जिसकी झारखंड में महत्वपूर्ण उपस्थिति है। कंपनी के झारखंड में कई सीमेंट संयंत्र हैं, जो राज्य की निर्माण आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दलमिया सीमेंट की झारखंड में उपस्थिति न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था में योगदान करती है, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी प्रदान करती है। कंपनी के झारखंड संयंत्रों में से एक झारखंड के बोकारो जिले में स्थित है, जो राज्य के पूर्वी हिस्से में स्थित है।

हैवी इंजीनियरिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचईसी) झारखंड के रांची में स्थित एक प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी है। यह कंपनी भारी इंजीनियरिंग और पूंजीगत सामग्री के क्षेत्र में काम करती है और इस्पात, खनन, रेलवे, ऊर्जा, रक्षा, अंतरिक्ष अनुसंधान, परमाणु और रणनीतिक क्षेत्रों में पूंजीगत उपकरणों की एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता है। एचईसी की स्थापना 1958 में हुई थी। कंपनी के पास झारखंड में एक विस्तृत उत्पादन सुविधा है, जिसमें इस्पात पिघलाने, ढलाई, फोर्जिंग, फैब्रिकेशन, मशीनिंग, असेंबली और परीक्षण की सुविधाएं शामिल हैं।

10. झारखण्ड की मशहूर हस्तियां एवं पुरस्कार विजेता

स्वतंत्रता सेनानी



बिरसा मुंडा (1875-1900 ई.): बिरसा

मुंडा एक महान भारतीय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और मुंडा जनजाति के लोक नायक थे। उनका जन्म १५ नवंबर, १८७५ को झारखंड के उलिहातू गाँव में हुआ था। उन्होंने ब्रिटिश राज के दौरान आदिवासियों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी और उन्हें अपने धर्म और संस्कृति पर गर्व करने के लिए प्रेरित किया। आदिवासी उन्हें भगवान मानते हैं और 'धरती आबा' के नाम से भी जाना जाता है। उनकी वीरता और संघर्ष की कहानी आज भी झारखंड और पूरे भारत में प्रेरणा का स्रोत है।



बुधू भगत एक महान भारतीय

आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने 1832 में कोल विद्रोह का नेतृत्व किया था। उन्होंने अंग्रेजों और जमींदारों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और आदिवासियों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उनकी वीरता और साहस ने उन्हें झारखंड के लोगों के बीच एक महान नायक बना दिया है। बुधू भगत की कहानी आज भी झारखंड और पूरे भारत में प्रेरणा का स्रोत है।



तिलका माँड़ी एक महान

भारतीय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। उनका जन्म 11 फरवरी, 1750 ई. को झारखंड के सुल्तानगंज में हुआ था। वह संथाल जनजाति के थे और उन्हें "दिसोम दीवान" के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ कई लड़ाइयाँ लड़ी थीं और अपनी वीरता और साहस के लिए जाने जाते हैं। उनकी विरासत आज भी झारखंड और पूरे भारत में याद की जाती है।



नीलाम्बर-पीताम्बर पलामू के दो

महान भारतीय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने 1857 के सिपाही विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और पलामू के लोगों को स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उनकी वीरता और साहस ने उन्हें झारखंड के लोगों के बीच एक महान नायक बना दिया है। नीलाम्बर-पीताम्बर की कहानी आज भी झारखंड और पूरे भारत में प्रेरणा का स्रोत है।



सिद्धू-कान्हू संथाल जनजाति के दो महान

भारतीय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने 1855-1856 में ब्रिटिश सत्ता, साहूकारों, व्यापारियों व जमींदारों के खिलाफ संथाल विद्रोह (हूल विद्रोह) का नेतृत्व किया था। उन्होंने अपने भाइयों चांद और भैरव के साथ मिलकर आदिवासियों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी और उन्हें अपने धर्म और संस्कृति पर गर्व करने के लिए प्रेरित किया। उनकी वीरता और संघर्ष की कहानी आज भी झारखंड और पूरे भारत में प्रेरणा का स्रोत है।



पाण्डेय गणपत राम एक महान

भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने 1857 के सिपाही विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनका जन्म 17 फरवरी, 1809 को झारखंड के लोहरदगा जिले में हुआ था। वह नागवंशी राजा के भूतपूर्व दीवान थे और 1857 के क्रांति के नेता बने थे। उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी और उन्हें अपने धर्म और संस्कृति पर गर्व करने के लिए प्रेरित किया था।

झारखण्ड खेल जगत



जयपाल सिंह मुंडा एक प्रसिद्ध भारतीय हॉकी खिलाड़ी थे जिन्होंने 1928 के अमस्टर्डम ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम का नेतृत्व किया था। वह भारतीय हॉकी टीम के पहले आदिवासी कप्तान थे। जयपाल सिंह मुंडा का जन्म 3 जनवरी 1903 को झारखंड के खूंटी जिले में हुआ था। उन्होंने अपने स्कूली दिनों से ही हॉकी खेलना शुरू कर दिया था और जल्द ही अपनी उत्कृष्ट खेल क्षमताओं के लिए जाने जाने लगे। जयपाल सिंह मुंडा ने अपने करियर की शुरुआत 1926 में की थी, जब उन्हें भारतीय हॉकी टीम में चुना गया था। उन्होंने 1928 के अमस्टर्डम ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम का नेतृत्व किया था, जहां भारत ने स्वर्ण पदक जीता था। जयपाल सिंह मुंडा को उनकी उत्कृष्ट खेल क्षमताओं और नेतृत्व क्षमताओं के लिए जाना जाता था। उन्होंने भारतीय हॉकी को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।



महेंद्र सिंह धोनी एक पूर्व भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी और कप्तान हैं, जिन्हें क्रिकेट के इतिहास में सबसे महान खिलाड़ियों में से एक माना जाता है। उनका जन्म 7 जुलाई, 1981 को रांची, झारखंड में हुआ था। उन्होंने अपने क्रिकेट करियर में कई रिकॉर्ड बनाए और कई पुरस्कार जीते, जिनमें 2011 क्रिकेट विश्व कप और 2007 आईसीसी विश्व ट्वेंटी20 शामिल हैं। उन्हें 2009 में पद्म श्री और 2018 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।



दीपिका कुमारी झारखंड की एक प्रसिद्ध तीरंदाज हैं, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पदक जीते हैं। उनका जन्म 13 जून, 1994 को झारखंड के रांची जिले में हुआ था। दीपिका ने अपने तीरंदाजी करियर की शुरुआत 2005 में की थी और जल्द ही विश्व स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उन्होंने 2010 के राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीता और 2012 के लंदन ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया। दीपिका को उनके योगदान के लिए 2012 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।



अशुता लकड़ा झारखंड की एक पूर्व भारतीय हॉकी खिलाड़ी हैं, जिन्होंने भारतीय महिला हॉकी टीम के लिए कई वर्षों तक खेला। उनका जन्म 21 जून, 1981 को झारखंड के सिमडेगा जिले में हुआ था। अशुता ने अपने हॉकी करियर की शुरुआत झारखंड के लिए घरेलू हॉकी से की थी और जल्द ही भारतीय महिला हॉकी टीम के लिए चुनी गईं। उन्होंने 2002 के राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीता और 2006 के डब्ल्यूएचएल में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया। अशुता को उनके योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।



प्रेमलता अग्रवाल एक प्रसिद्ध भारतीय पर्वतारोही हैं जिन्होंने अपनी साहसिक और दृढ़ इच्छाशक्ति से पर्वतारोहण के क्षेत्र में एक नए मानक को स्थापित किया है। उन्होंने 2013 में माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई की और सफलतापूर्वक इसके शिखर पर पहुंची, जिससे वे इस उपलब्धि को हासिल करने वाली सबसे उम्रदराज भारतीय महिला बन गईं। प्रेमलता अग्रवाल की उपलब्धियों ने न केवल उन्हें एक प्रेरणा के रूप में स्थापित किया है, बल्कि उन्होंने महिलाओं के लिए पर्वतारोहण और अन्य साहसिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसरों को भी बढ़ावा दिया है।



सौरभ तिवारी एक भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी हैं, जो झारखंड के लिए घरेलू क्रिकेट खेलते हैं। उनका जन्म 30 दिसंबर, 1989 को रांची, झारखंड में हुआ था। वह एक बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं और अपने आक्रामक बल्लेबाजी शैली के लिए जाने जाते हैं। टीवी ने अपने करियर में कई पारियां खेली हैं और उन्हें भारतीय क्रिकेट टीम के लिए भी चुना गया है।



सलीमा टेटे झारखंड की एक प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी हैं, जो भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान हैं। उनका जन्म 27 दिसंबर, 2002 को झारखंड के सिमडेगा जिले में हुआ था। सालिमा ने अपने हॉकी करियर की शुरुआत झारखंड के लिए घरेलू हॉकी से की थी और जल्द ही भारतीय महिला हॉकी टीम के लिए चुनी गईं। उन्होंने 2020 टोक्यो ओलंपिक में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया और अपने खेल से प्रशंसा प्राप्त की।



लक्ष्मी पाड़िया एक प्रसिद्ध भारतीय मुक्केबाज हैं, जिन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया है और कई पदक जीते हैं। उनकी उपलब्धियों में 58वीं अखिल भारतीय पुलिस महिला मुक्केबाजी चैंपियनशिप, पुणे, 2010 में स्वर्ण पदक, 11वीं सीनियर महिला राष्ट्रीय मुक्केबाजी चैंपियनशिप, तिरुशूर में, 2010 में रजत पदक, 34वें राष्ट्रीय खेल (महिला मुक्केबाजी), जमशेदपुर, 2011 में स्वर्ण पदक और 60वीं अखिल भारतीय पुलिस महिला मुक्केबाजी चैंपियनशिप, 2012 में स्वर्ण पदक शामिल हैं।



दिवाकर प्रसाद एक प्रसिद्ध भारतीय मुक्केबाज हैं जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया है और कई पदक जीते हैं। दिवाकर प्रसाद को उनके खेल के प्रति समर्पण और दृढ़ संकल्प के लिए जाना जाता है, और उन्हें भारतीय मुक्केबाजी में एक प्रमुख नाम माना जाता है। उनकी उपलब्धियों ने उन्हें एक प्रेरणा के रूप में स्थापित किया है और उन्होंने भारतीय मुक्केबाजी को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित किया है।

झारखण्ड की अन्य प्रसिद्ध हस्तियां



राम दयाल मुंडा (23 अगस्त 1939-30 सितंबर 2011)

भारत के एक प्रमुख बौद्धिक और सांस्कृतिक व्यक्ति थे। आदिवासी अधिकारों के लिए राँची, पटना, दिल्ली से लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ) जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों तक उन्होंने आवाज उठायी, दुनिया के आदिवासी समुदायों को संगठित किया और देश व अपने गृहराज्य झारखंड में जमीनी सांस्कृतिक आंदोलनों को नेतृत्व प्रदान किया। 2007 में उन्हें संगीत नाटक अकादमी का सम्मान मिला, तो 22 मार्च 2010 में राज्यसभा के सांसद बनाए गए और 2010 में ही वे पद्मश्री से सम्मानित हुए।



मुकुंद नायक (जन्म 15 अक्टूबर 1949) एक प्रसिद्ध भारतीय

कलाकार हैं। वह एक लोक गायक, गीतकार और नर्तक हैं। नायक नागपुरी लोक नृत्य झुमर के एक प्रमुख प्रतिपादक हैं। उन्हें पद्म श्री और संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वह झारखंड के सिमडेगा जिले के बोकबा गाँव में जन्मे थे। मुकुंद नायक ने अपने करियर की शुरुआत सार्वजनिक स्थानों पर गीत गाने से की। उन्होंने आकाशवाणी में प्रदर्शन किया और बाद में बिहार सरकार के गीत और नाटक विभाग में शामिल हुए। उन्होंने विदेशों में भी प्रदर्शन किया और नागपुरी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए "कंजबन" संगठन की स्थापना की।

झारखण्ड के पुरस्कार विजेता

पद्म भूषण

- शैलेश कुमार बंदोपाध्याय - 2010
- महेंद्र सिंह धोनी - 2018
- करिया मुंडा - 2019

पद्म श्री

- | | |
|--|------------------------|
| ✓ राजकुमार सुधेन्द्र न सिंह देव - 1991 | ✓ दीपिका कुमारी - 2016 |
| ✓ परशुराम मिश्रा - 2000 | ✓ मुकुंद नायक - 2017 |
| ✓ केदार नाथ साहू - 2005 | ✓ बलबीर दत्त - 2017 |
| ✓ श्यामा चरण पति - 2006 | ✓ दिगंबर हांसदा - 2018 |
| ✓ वसुंधरा कोमकली - 2006 | ✓ बुलु इमाम - 2019 |
| ✓ महेंद्र सिंह धोनी - 2009 | ✓ जमुना टुडू - 2019 |

संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार

- चेतन जोशी, बांसुरी वादक
- महावीर नायक, नागपुरी लोक गायक
- मुकुंद नायक, लोक कलाकारमहावीर नायक, नागपुरी लोक गायक



इम्तियाज़ अली एक प्रसिद्ध भारतीय फिल्म निर्देशक,

पटकथा लेखक और निर्माता हैं। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत टेलीविजन शो से की और बाद में फिल्मों में आये। उन्होंने कई सफल फिल्मों निर्देशित की हैं, जिनमें "सोचा ना था", "जब वी मेट", "लव आज कल", "रॉकस्टार" और "हाईवे" शामिल हैं। इम्तियाज़ अली को उनकी फिल्मों में प्रेम, संबंधों और आत्म-खोज के विषयों को दर्शाने के लिए जाना जाता है। वह एक प्रभावशाली और सम्मानित फिल्म निर्देशक माने जाते हैं।



प्रियंका चोपड़ा एक प्रसिद्ध भारतीय अभिनेत्री, गायिका,

और फिल्म निर्माता हैं। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत 2000 में मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता जीतने के बाद की थी। उन्होंने कई सफल फिल्मों में अभिनय किया है, जिनमें "फैशन", "कमीने", "7 खून माफ", "बर्फी!", और "मैरी कॉम" शामिल हैं। प्रियंका चोपड़ा को उनके अभिनय के लिए कई पुरस्कार मिले हैं, जिनमें एक राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और कई फिल्मफेयर पुरस्कार शामिल हैं। वह एक प्रभावशाली और सम्मानित अभिनेत्री मानी जाती हैं और उन्होंने भारतीय सिनेमा में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है।



अशोक भगत, जिन्हें प्यार से बाबा जी के नाम से भी

जाना जाता है, एक प्रसिद्ध भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता और विकास भारती के सचिव हैं, जो झारखंड में ग्रामीण आबादी के उत्थान के लिए समर्पित एक गैर-सरकारी संगठन है। झारखंड में स्वच्छ भारत अभियान के नामित नेता के रूप में, अशोक ने क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके निस्वार्थ सामाजिक सेवा के योगदान ने उन्हें 2015 में पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया, जो भारत में चौथा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है।

- | | |
|----------------------------------|----------------------------|
| ✓ राम दयाल मुंडा - 2010 | ✓ शशधर आचार्य - 2020 |
| ✓ मकर ध्वज दरोगा - 2011 | ✓ मधु मंसूरी हसमुख - 2020 |
| ✓ पंडित गोपाल प्रसाद दुबे - 2012 | ✓ छुटनी महतो - 2021 |
| ✓ प्रेमलता अग्रवाल - 2013 | ✓ गिरधारी राम गोंडू - 2022 |
| ✓ अशोक भगत - 2015 | ✓ जानुम सिंह सोय - 2023 |
| ✓ साइमन उरांव - 2016 | |